

— दो शब्द —

आमा—अनादि कालस भोग प्रियाम में मस्त थाकर क न मरग की चक्कीमें पलकर अनेक विष दु खोंको पाता है । उस ज्ञान मरग की बड़ी को तोहने के लिये आमाको भी सरह कथित धम की आराधना करनी चाहिये ।

वह मानवजन्म घरा किमती है, बहुत दुःख है, महा पुण्यस भिग है । देवता भी इस जीवन की चाहना करत हैं । इसका कारण एक ही है कि जैसी त्याग धमकी आराधना यहा हो सकनी है, वैसी आराधना कीसी अन्ध गतिमें नहीं हो सकती है । परमात्मा जिनेश्वर दवन दो प्रकारक धमकी प्रदपणा की— एक साधुधम दूसरा धारक धम । साधधम— पालनमें जो असमय है उनके दूसरा लिये मान धारक धमका धनाया है । जियनमें नितनी भी त्यागधम की— आराधना हो सक, नितना नी प्रतनियमका पालन हो सक उतना ही जीवन धन्य समझना । ठरयांग रक्त-और पापकी प्रतिग-ले-लेय तो बहुतसे पारसे बच सकता है । मेरु और सरमय में जिनना अतर है उतना अतर त्याग-प्रतिग और छुर्मे है ।

प्रस्तुत पुस्तकमें बारह प्रतका सति न्यम्प— बतलाया गया है । मनीको समझकर आमा वनीजीवन बनावे— तो हमारा यह प्रयत्न सफल होगा ।

अरिहता मग्गो
 चापञ्चारि मुमाहूणागुग्ग
 जित्तपन्नरावत्त
 इअ मम्मत्त मग्गहिअ
 चत्तारि मगल
 अरिहता मगल
 निद्धा मगल
 साहू मगल
 केवल्लि पञ्चत्तोषम्मो मगल

॥ नमो जिष्णवे ॥

श्री आत्मकमल लङ्घिसूरीश्वरेभ्यो नमः

श्री आत्मकमल लङ्घिसूरीश्वरजी

जैन ग्रंथ मालाया-अष्टम पुष्पम्

वारह व्रत की नोंध

धर्मस्नेही

मु

समेम भेट

प्रकाशक—

श्री आत्मकमल लङ्घिसूरीश्वरजी जैन ज्ञान मंदीर

असन्नेन, दादर, बी. बी. २८

प्रथमावृत्ति
प्रत १०००

कोल्हापूर

मसत २००८
फाल्गुन शुद्ध तृतीया



मुद्रक—

या ता ठकार,
भीमिह्वर प्रस, कोल्हापूर

☆ स्वर्गीय ☆

पूज्य मातुश्री पार्वतीदेवी

के

चरण कमलों में

समर्पण

त्रिनित पुत्र

इमचन्द जेष्ठमल परमार,
रातीलाल जेष्ठमल परमार,

शा. भानिलाल जेष्ठमल परमार,
सदाक गुजरी, ३० हापूर

卐 धारह व्रत की नोंध 卐

सम्यक्त्व,

सुख — अरिहत भी अठारह दोषों से मुक्त ओर गारह गुणों के धारक ।

सुगुरु — गुरु महाद्यत गरी और शुद्धधर्म के उपदेशक ।

सुधर्म — श्री जीनश्वर भगवतने कथन किया हुआ अहिंसा, सयम और तप प्रज्ञान धर्म ।

१ पहला व्रत

स्थूल (दश में) प्राणातिपात विरमण व्रत—निरपराधि तम यान हलने चलन जीना नो डरानापन, मारने की बुद्धि सनही मारना ।

गृह, कुआ, नदी, तालाब आदि के आरभ समाारभ तथा व्यापार और औपधि आदि क कारण जयणा ।

पहले व्रत के पाच अतिचार—

१ गध—जोर के आगेज म गाय, घोडा इत्यादि प्रदुग्ग जानवरों को मारना ।

२ वन—गाय, भैंस, बैर इत्यादि जानवरा का कमर बाधना ।

३ छत्रिच्छेद—पैल इत्यादि जानवरा क रानों का छदन करना और नाथ डालना ।

४ अतिभारारोपण—जानवरा पर उनकी ताकत से ज्यादा बोझा डोना ।

५ भात पाणी का चिच्छ—गाय, डोर इत्यादि जानवरों को उनके रोव के चार मुताबिक कम दना या गैर समय म देना ।

२. दूसरा व्रत

स्थूल (देश में) मृपापाद विरमण व्रत—पाच मोठे झूठ नहीं बोलना ।

१ क्या सत्यधि—क्या ने सगपण या विवाहादिके साथ क समय उसने धारे म झूठ नहीं बोलना तथा नोकर बाल सन मनुष्यो क धारे न झूठ नहीं बोलना इरादपुत्रक पातहुण झूठ नहीं बोलना ।

२ होर सत्यधि—गाय धारे चारोंर बाल पशुजा की रज तथा दुध जादि के धार म झूठ नहीं बोलना । बालन क उपयोग रखना चाहिये ।

३ भूमि सर्गाय जमीन रत, मरान दुसागराडी आदि के धार म झूठ नहीं बोलना । दुसा की जमान पर अपना रज नहीं लिखाना ।

४ आपण मरवि -दूसरा की वारण को नहीं पचाना चाहिये । उसका मालिक नहीं लेने जान तो जयण रखनी चाहिये ।

५ झूठी माफी—झूठी साक्षी नहीं र्ना । बीसी को र्ना त शिक्षा (फासी) योग्य की शिक्षा होती हो उसम असन्य बोलना पडे तो जयणा ।

उपर के नियमा म नोकरा वगेरा मे फाजीयात झूठ बोलना पडे तो जयणा ।

दूसरे व्रत के पाच अतिचार—

१ सहसात्कार—जैसा मनस आया ऐसा रीना मोचे बिनासमये बोलना ।

२ रहस्य भाषण—कीमी की गुप्त बात को जाहीर में नहीं कहना ।

३ विश्वास का पत्र भेज — अपनी स्त्री आदि विश्वास मनुष्यों की नीति नहीं करना ।

४ झूठा रूप — झूठा लगने तथा झूठी मलाय या साक्षी नहीं रनी ।

५ कुशलेंद—झूठा स्थापित लिखाना तथा लिखे गये व्यक्तों को निराशना —

३ तीसरा व्रत

सूत्र अदत्ताग्नान् विरमणं व्रतम् ।

१ कीसी के घर में ग्यानर स्वयं नष्ट न होकर व
पास दिलायाना नहीं—

२ गाठ नहीं ओढ़नी ।

३ रीमे (जेब) नहीं काटने ।

४ ताला नहीं तोड़ना ।

५ छूटफाट नहीं करनी ।

६ कीसी की भी पढी हुई चीज न छूटने देनी

७ रान नष्ट (शिखा) कर नष्ट न होने देना
ऐसी चोरी नहीं करनी

तीसरे व्रत के पांच अतिचार—

१ चोर के पाम से जानते हुए नष्ट न होने देना

२ तरार-चोरफो चोरी न करने देना

३ तत्परतिरूप — अच्छी तरह नष्ट न होने देना
भेलमेल (मिलाप) न करने देना
बनावट मराय नहीं देना

४ निरुद्धगमन—राज्य न छोड़ कर देना
नियम के निरुद्ध स्वरूप न होना ।

५ नष्ट न होने देना

५. पाचमा व्रत

परिव्रत परिमाण ग्रन्थ —

- १ शेरव
- २ धन्य-नमान चानका
- ३ म्यावर मिछरन घा, दुशान, बरगा आदि
- ४-५ मोना, चागा, मागा, ईरा आदि व्रतन ।
- ६ करनीपर घर का पृथ्वर मामान, राग रबीरा, बागा इत्यादि ।
- ७ मोर वार । ८ पार पंगेश चानवर । ९ अत्र चाना ।

एतद् नौ प्रकार ५ परिव्रत का परिमाण बताया और विधान के अन्तर्गत धर्म काय व्रत की श्रुति एवं दत्त आदि ।

पाचम व्रत का पात्र अतिशय —

- १ धन्य-परिमाण-विषय — विषय समय परिमाण व्रत धन व्रत को अत्र पुत्र, मा, भाइ आदि के नाम का व्रत या व्रत के दत्त व्रत ।
- २ अत्र परिमाण विषय — अत्र विषय विषय में उपादा रचना ।
- ३ मोना, चागा विषय में उपादा रचना ।
- ४ नागा, विषय आदि विषय में उपादा रचना ।
- ५ नाम, नामी तथा गद्य, गीत आदि चानवरो का परिमाण में उपादा रचना ।

६ छटा घत

दिशि परिमाण घत (गुण घत)

चार मुद्राणि निगण चार विदिशाण ऊपर तथा अधो लोफ
मिलकर दस निगणोमें जाने आत कर नियम करना ।

इसके करवात पत्र, तार, समाचारपत्र छिगरो या पडने या
दूमरे किमीको भेजने की व्यवस्था ।

पांच अनिवार—

- १ अन्धान्ति परिमाणान्त्रिम—मर्यादा से ज्यादा जरूर या
नीचे जाना ।
- २ अधोदिश परिमाणान्त्रिम—चार दिशाओं की मर्यादा को
उड़पना ।
- ३ विष्टान्ति परिमाणान्त्रिम—मय निगणों ५ दोसां को
एकत्र करके एक निगण में ज्यादा जाना ।
- ४ क्षेत्र वृद्धि—अपनी स्वेच्छा में धारे हुए परिमाण में वृद्धि
या हानि करना ।
- ५ स्मृति अनर्थान—मित्र कीस का परिमाण कीया बट भूल
जाना धीरे आगे जाना तथा मन्दसुख हानि हुए भी
आगे जाना ।

७ सातवा व्रत

सातमें भोगोपभोग विरमण व्रत (गुण व्रत)

भोग—एक दूधे जो वस्तु उपयोग में आती है । जैसे भोजन थिलेपन आदि वस्तुएँ ।

उपभोग—बारबार जो वस्तु उपयोग में आती है । अर्थात् घर की कपड़े वागिने इत्यादि ।

उपरोक्त वास्तुओं का परिमाण (सख्या और मापसे) कराने के लिए चौदह नियमों को याद करना ।

- १ सचित्त—दिन में सचित्त द्रव्य मुहमें डालें उसकी सख्या रखनी ।
- २ द्रव्य—जितनी चीजें मुहमें डाली तथा चितने स्वाद जीभने लिये ऐसे द्रव्यों की गिनती रखनी ।
- ३ विगय—धी, गुट, दुध, दही, तेल तथा तली हुई चीज इत्यादि छ विगयों का हर रोज एक विगय का मूल या कच्चे रूप में त्याग करनी ।
- ४ पाण्डू वानह जूने तथा मौजे इत्यादि की गिनती रखनी ।
नोट—सुपाही, इन्गुरी, मौजे इत्यादि मुखवामची चीजों का तोड़ रखना ।
- ५ पत्थ—(यस्त्र) पत्थ में पड़ने के बरदा की सरया नियत रखनी ।
- ६ कुमुमेमु—नाकद्वारा मुपने की वातु का तोड़ रखना ।

३ वृषि—हल, चूहाही, पायड़ा इत्यादि की सव्या नियत करनी ।
उपरोक्त नियमा को फररोन मुन और रातको याद कर ।

निष्प—त्रतपारीआ को मानव धन का पालन करने में
मद्रह रमादान (पाय व्यापार) को छोड़ना हीन कारक है ।

१५ पमादान

१ अगर कम—कुम्हार, महुना, गुहार इत्यादिओं ने अग्नि
मरधि कम उम सत्र म चुना, इट, नलिये, इत्यादि
चीजोंका व्यापार करना । (घर उपयोग के लिए उपरोक्त
चीज करानी पड़े, लानीपड़े या रची रहे तो बचने
की जयगा ।)

२ यन कम—दरे पान, पृष्ठ गार लरहे, यनरति इत्यादि
का व्यापार करना ।

३ शकट कम—गाड़ी, हल, प्रमुख तैयार करने का व्यापार
करना ।

४ भाटक कम—गाड़ी, घोड़ा इत्यादि सिराये देन का
व्यापार करना ।

५ स्फोटक कम—क्षेत्र, कुआ, बाग इत्यादि खोदना तथा
सुरगमें जमीन फोड़ने का व्यापार करना ।

६ दत धाणिज्य—हाथीदात वगैरा का व्यापार करना ।

७ लाक्षा धाणिज्य—लाग्न या गुद इत्यादि का व्यापार करना ।

८ रसधाणिज्य—धी, तेल, गुद इत्यादिका व्यापार करना ।

९ विष धाणिज्य—अर्धम, हार, रन्धनाग, सोमल इत्यादि का
व्यापार करना ।

१० केसाधाणिज्य—पशु पक्षीके घाल, पंग, उन इत्यादि का
व्यापार करना ।

- ११ यत्रमिलन कम—मील, जीन, सचा, चक्कीघाणी इत्यादिका व्यापार करना ।
- १२ निलाँछन कर्म—घँट, घोंटे, को नपुसक करना या करवाना तथा नारु, कान या शरीर के दुस्तर हिस्से त्रेचना या ज़राना ।
- १३ दवदान कम—उन म या सोम म किसी भी जगह पर अमिदाह दना या दिलवाना ।
- १४ जलशोषण कम—सरोवर, तलाव इत्यादि ओ के पानी को सुखाना या सुखवाना ।
- १५ असनी पोषण—मनवहलाय के हेतु या प्रीडा करने के हेतु कुत्ते, बिल्ली, तोता, मैना इत्यादि को पालना, तथा असनी स्त्री वेदया आदिर्या का पोषण करना ।

नाध—उपरोक्त—१६ह कर्मादान को देगस या सरसे त्याग

करना या जयगा रखनी

मातर घन के पाच अतिचार—

- १ सचित्त आहार—सचित्त वस्तु खाना ।
- २ सचित्त प्रतिव्य आहार—सचित्त के साथ की मिभतरवस्तु खाना ।
- ३ अपक्व आहार—बारबर नहीं परी हुइ वस्तु खाना ।
- ४ दुष्पक्व आहार—ग़रान रीत से पकाइ हुई (मिभित) वस्तु खाना ।
- ५ तुच्छीरधि भक्षण—खाने के काम म थोडा आये और ज्यादा बाहर फटना पड गेभी वस्तु खाना । जैसे गन्ना, दाहम, बेर इत्यादि ।

नीध—पाच अतिचार तथा पदर कर्मादान के १६ह अतिचार

मिलकर सातवें घन के कुल ० (बीस) अनिचार

चौदह नियम—

धारी हुड

चापरी हुड

लाम मे

मचित्त

प्य

पिण्ड

पाण्ड

तपोल

यस्त्र

कुसुम

साहन

शरन

विलपन

मद्यय

दिशी

नान

भात पाणी

पृथ्वीराय

अपराय

तेराय

वायुकाय

वनरतिराय

अमि

मसी

कृपि

८ आठवां व्रत

अनपद विरमण व्रत—

किसी भी पशु, पक्षी को ब्रह्मा के हेतु से घर पर पालना नहीं, उसमें भी कुत्ते मिट्टी आदि हिंसक प्राणीयों को अवश्य नहीं पालना चाहिये।

हाथी, घोड़ा, बकरा, गुराडा इत्यादि की जहाँ पर लट्काई होती हो वहाँ पर खेलने के हेतु से नहीं जाना। मार्ग में चलते चलते जिस पहे तो नसरी जयगा। किसी को भी पसी न जानी हो वह भा नहीं गेयनी।

वन सरे जहा तक ली कथा, राउरथा, देवकथा या भोजन कथा, अकारण नहीं करनी। खेल चलने बैठते पंखों के फल, फुल या पत्ते नहीं तोटना। गहना का व्यापार भी नहीं करना। घर के छिप रखना पहे तो नयगा।

घरटी, (चक्की) ओम्बली, मावेला, हल, कुदाला कोप आदि उपकरण तैयार रख मागने पर नहीं देने।

पाप अतिचार —

- १ कर्प—विकार उठे ऐसी कुचेष्टा करनी।
- २ कौकुन्य—वाम-उत्पन्न करे ऐसी कर्त करनी।
- ३ मौगव्य—मुहमे हमने के हेतु से वैसा ~~स्व~~ या किसी की गुप्त बात ~~स्व~~ करनी पाये ऐसा बोलना।

- ४ मयुक्ताधिररण—अपनी जरूरीयात से ज्यादा अधिकरण इष्ट करना ।
- ५ भोगतिरीस्वना—भोग तथा परिभोग म वापरने में आदी हुइ चीजों से ज्यादा तैयार रखना ।

९ नौवां व्रत

सामायिक व्रत—

हमेशा सामायिक करने का नियम । शरीरान्त्रिक कारणों से आगे पीछे करना होवे तो ऐसा धारना । व्रत धारी को यने वहाँ तक रोना एक सामायिक अवश्य करनी चाहिये ।

पाप अतिचार—

- १ मन दुःप्रणिध्यान—मन में कुत्रिहस्य (गराप धीचार) चिंतनना तथा मन को नष्ट करने प्रयत्नाना ।
- २ वचन दुःप्रणिध्यान—माया वचन बोलना वचन से दुष्ट प्रवर्तना ।
- ३ काय दुःप्रणिध्यान—सामायिकम शरीर को हीलाना, दुष्टाना, भीत के सहाय से बैठना तथा नीच लेनी ।
- ४ अनवस्था दोष—जिस समय से सामायिक लिया उस समय से न पारे या जल्दी पारे ।
- ५ स्मृति विहीन—सामायिक लेकर समय भूले या पारना भूले ।

दसवां व्रत

देशायगासिख व्रत—

देशायगासिख यान ८ सामायिक तथा नौ प्रतिक्रमण (मुषह, तथा शामवा) की सामायिक मिलकर कुलदस सामायिक करना। वर्ष में एकसे एक पर देशा यात्रा करना। अष्टासप्त वर्षवास आदि पञ्चरत्ना कर व चौदह नियम धारा।

पाप अतिपाप—

- १ आनयन प्रयोग—धारी हृद भमीने परत से वस्तु मगवाना।
- २ पट्य प्रयोग—हृद मे बाहर चीज भेजनी।
- ३ शब्दानुगत—शब्दद्वारा हृद के बाहर से वस्तु मगवाना।
- ४ रूपानुगत—रूप दीखाकर हृद के बाहर से वस्तु मगवाना।
- ५ पुण्ड्र प्रक्षेप—कण्ट केक कर हृद के बाहर से वस्तु मगवाना तथा हृद के बाहर रहनेवालोंको में यदा हृद ऐसा यताने के हेतु कण्ट केरना।

११ ग्यारहवा व्रत

पौषध व्रत—

हर घण्टे में आठ प्रहर या चार पहर का पौषध करना ।

पौषध के मुख्य चार प्रकार—

- १ आहार पौषध—देश से अनासना आयचित ।
- २ शरीर सत्कार पौषध—शरीर का सत्कार नहीं करना ।
- ३ अन्यापार पौषध—सीसी भी तरह का सासारीक व्यापार नहीं करना ।
- ४ वधचर्य पौषध—वधचर्य पालना ।

इसमें बीछे के तीन प्रकार के पौषध तो सब में करने के हैं आहार पौषध देशसे और मर्ने से दोनों प्रकार में हो सपता है ।

पाच अतिपार—

- १ अप्रतिलेखित शय्या—सवाराए शय्या सतारक, मथारे की बरोबर पडिलेहणा नहीं करना ।
- २ अप्रमाजित दुष्प्रमाजित—शय्या सतारक शय्या, मथारा धराभर नहीं पुजना या प्रमाजना ।

- ३ अग्रति लेखित दुष्पति न्धार—स्थविल, मात्रा की भूमि धरावर पहीलेहणा नहीं करना ।
- ४ अग्रमा० दुष्पमा० न्धारपासवण भूमि—स्थविल मात्रा की भूमि धरावर पहीलेहणा नहीं करना ।
- ५ पौष्य विधी विपरीतता—पौष्य समय नहीं लेना तथा जल्दी पारना ।

चारहवा व्रत

अतिथि सविभाग व्रत—

मूल रीतिसे आठ ग्रहर का पौषध करना चौविहार व्यवसाय करने और दुमरे दिन जिन पुनाररके मुनिरात्र को प्रतिलाभ करवे व्रितनी बीचें मुनिरात्र बहोरे उतनी ही बीचें बापर कर परासर्ग करे उसे अतिथि सविभाग व्रत कहते हैं ।

यह व्रत वर्ष में जितना करना हावे उमकी सख्या धार ।
यदि सपूर्ण वर्ष में मुनिमहाराज का योग न बने तो स्यागभी माई का त्रिमासे और व्रत का पालन करे ।

पाच अतिचार—

- १ सचित्त निश्चय—सचित्त वस्तु को अचित्त वस्तु में साय मिलान कर धोहरना ।
- २ सचित पिधान—सचित वस्तु द्वारा डाकी गद् अचित वस्तु देना ।
- ३ अत्र यदेना—अपनी वस्तु दुमरे की दे लेना कहकर नही देना । दुमरों की वस्तु अपनी कहकर देना ।
- ४ समत्सरदान—मत्सर करके दियन का दान देना ।
- ५ कालानिष्ठ—बहोरने का समय बितने के बाद दान देने का आग्रह करना ।

इन पाच अतिचारों को टालकर साधु साध्वी को दान देना ।

नोध—एतरोक्त सम्यक्तर मूल भारह व्रत के अतिचारों को जानकर व्रतपारी भवभीक आत्मा अतिचार रूप मल से व्रत रत्न दुषित नही हो इसके लिए सावधानी रख ।

मिथ्यात्व

पाच प्रकार—

- १ अभिमिथीर — अपने ग्रहण कीया हुआ बुद्ध्युक्त नहीं छोड़े ।
- २ अनभिग्रहीर — सब द्जान को समाप्त माने ।
- ३ अभिनिवेशिर — द्दरादापूर्यर मानपान के लोभसे सबे माग को जानने हुए भी अपने मत को स्थापन करनेकी उल्टी प्रवृत्ति करे ।
- ४ सांग्यिर — सबकुछ के वचन में शरा रखे ।
- ५ अज्ञाभोगिर — जसको जीर्ण को अनुपयोग पणे बतावे ।

छ प्रकार

- १ लौकिक देवगत — रागद्वेषसे कुरेव को मुदेव तरीके माने ।
- २ लौकिक गुरुगत — अनर आरभ परिग्रह में रहनेवाले अन्य दर्शनीओं के गुरु को गुरु की बुद्धिसे माने ।
- ३ लौकिक गुरुगत — जो कि कपट होली बलेशादिक लोकोत्तर पर्ययी बुद्धिसे माने ।
- ४ लोकोत्तरदेवगत — अठारह त्रियों से मुक्त देव को इस लोक तथा परलोक के पौद्गलिक मुख के कारण माने ।
- ५ लोकोत्तर गुरुगत — कचन, कामी के त्यागी गुरुओं को इहलोक तथा परलोक के पौद्गलिक मुख के कारण माने और आधार पाणी आदि ने ।

६ लोकोत्तर धर्मगत—मर्यादा मगधान के कहे हुए दान, शील, तप, भाव रूप धर्म को इस लोक तथा परलोक के पौद्गलिक सुख की अपेक्षा से करे

चार प्रसार

- १ प्रपण—निज भाषित अथ से उलटी (विरुद्ध) प्ररपणाकर।
- २ प्रयत्न—लौपिक तथा लोकोत्तर मिथ्याचार की क्रीया करनी।
- ३ परिणाम—मन में जुग फठना रग्ये तथा केवली भाषित उन तत्वा के अथ ठीक न कह।
- ४ प्रदेश—मन्नागत रदीदृष्ट मोहनीय कम की भात प्रकृति। इस प्रकार मिथ्याचार के कुछ ८५ प्रसार हैं।

सामान्य बातें.

पद्यस्वाण

- १ नयकारशी—सूर्यास्त के बाद दो घड़ी याने ४८ मिनट के बाद ।
- २ पोरमी—सूर्यास्त के बाद एक पहर के बाद ।
- ३ साठ पोरमी—सूर्यास्त के बाद साठ पहर के बाद ।
- ४ परिशुद्ध—सूर्योदय के बाद दो पहर (पहला अर्ध दिन के बाद ।
- ५ अषट्क—सूर्योदय के बाद तीन पहर के बाद ।

सूरना—पद्यस्वाण सूर्योदय के पहले लेना तथा टाईम होने के बाद नरनार गिनकर पालना चाहिये । सूर्योदय से लगानर सूर्यास्त तक नितने घट काय चमका चौथा भाग करने पर जीवने घटे आन यह एक पहर समझना ।

आचरु के घर में दस चदरये—

१ नित मुन (घर नगसर) २ मागादिकादि धर्म क्रिया करणे के स्थानपर (पौषशाखा) ३ चूल्हेपर ४ पाणियारापर ५ रसोई घरम ६ घटीपर ७ ईश्वरपर ८ मट्टा (छाश) करने के स्थानपर ९ शय्यापर १० स्नान घरम ।

मान गरणे (छनने)

१ पानी छानने का २ घा छाननेका ३ तन छाननेका ४ दूध छाननेका ५ छाछ छाननेका ६ अचित उष्ण जल छाननेका ७ आटा-दिन छानने की ठनी ये (चालणी)

सात क्षेत्र—

१ निन प्रतिमा २ देरासर ३ जिनागम ४ साधु
५ साप्पी ६ आबक ७ आबिका

बत्तीस अनतकाय

- | | |
|--|-------------------------------------|
| १ कृष्णी के अदर जितने भी
पद पैदा होते हैं उनकी
सम जाती | १७ छुपी याने
वनस्पति |
| २ गीलीहल्ली | १८ छोटी पद्मिनी पद |
| ३ गीली अदरक | १९ गरमर (पच्छ देशमे
प्रसिद्ध है |
| ४ गीली सूरण | २० किसलय पत्र |
| ५ वसकद | २१ खीर मुजाकद |
| ६ इरा कपूर | २२ येग |
| ७ सतापरी | २३ हरि मोय |
| ८ पिराही टठा (सोछानी
भोटा फोटुन) | २४ लुण वृक्ष की छाछ |
| ९ कुँघार पाटा थोर | २५ खीलोटाकद |
| १० कूर सब छात की | २६ अमृत वेडी |
| ११, गिल्लोय (गुदवेळ) | २७ मूला |
| १२ टखन | २८ भूमी फोटा |
| १३ बांय चरेडी | २९ बाबवे (वधुका की
भाजी |

१४ गाजर	३० बिरठाहार
१५ पदका की भाजी	२१ कोमल आवली
१६ सुअर घड़ी	३२ आलू, रतालू, पिंडालू

चावीश अभक्ष्य

१ बट्टूष के फल	१२ कडा (ओला)
२ पारस पीरला तथा पीपली के फल	१३ सत्रतरह की मिट्टी
३ एरुक्ष (पीरला) के फल	१४ रात्री भोजन
४ ऊमरा (गुलर) के फल	१५ बहुवीच फल
५ कचुनर (पाल, ऊमर) काफल	१६ अनतकाय
६ मधु	१७ आचार अयाण
७ मन्त्रि	१८ घोलबडा
८ मास	१९ वेण
९ मक्खन	२० अनाना फल फुल
१० हिम (बाफ)	२१ तुच्छ फल
११ बिप (जहर)	२२ चलिठ रस

नोट— चार महा विगड मद्य, मन्त्रि, मास, मक्खन का अवश्य त्याग करना चाहिये ।

काल की मर्यादा

काल की मर्यादा और क्र.सं.	मीठान का काल	पाणी का काल
कार्तिक शु. १५ से फागुन शु. १४ मीवाला	८ महीना	४ प्रहर
फागुन शु. १५ से अषाढ शु. १४ उनाला	२० दिन	५ प्रहर
आषाढ शु. १५ से कार्तिक शु. १४ बरसात	१५ दिन	३ प्रहर

नोट—मीठान के काल मुताबिक आटा, गान्ना आदि का काल समथ ।

सात व्यसन

१ द्यूत-जुगार २ शीकार ३ मास ४ मर्तिर-मर्द
५ वेदयागमन ६ चारी ७ परस्त्रीगमन ।

नोट—इन व्यसनो का अवश्य त्याग करना चाहिये ।

